



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दौरा - भूज	२२-११-२२	१०	१-६

हकूमि को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, हरियाणा से मिला 30 लाख का प्रोजेक्ट एचएयू में फसल अवशेषों को तरल उर्वरक में बदलने पर होगा कार्य : प्रो. कान्धोज

हरियाणा न्यूज़ || हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकूला द्वारा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय उत्तरायण परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोगैस मलरी, ट्रॉटड मीटरेज और बजारों को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. चौ.आर. कान्धोज ने प्रगतिशील महाविद्यालयी विभाग को किसानों के लाभ के लिए उच्च



हिसार। कुलपति प्रो. चौ.आर. वासिल के साथ अधिकारी।

फोटो: हरिभूमि

गुणवत्ता वाले अनुसंधान परियोजना परियोजना करने पर बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए ऐकलिपक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगा, जिसे बायोगैस मलरी, सीकेज पानी और शीरा जैसे औद्योगिक करों के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोबियल अपघटन और किणवन तकनीकों को उपयोग करके

तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ हाइड्रोपोनिक खेती की ओरसत उपज को बढ़ाने में भी सहायता होगा। इसके अतिरिक्त इस परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर गमावनिक उर्वरकों से जुड़े जोखियों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रसायनिक उर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी।

वह परियोजना माइक्रोबायोटेलोजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा साहगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. लीला वर्ती एवं हार्टिकल्चर के सहायक प्रोफेसर डॉ. अरविंद यालिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. नीलज कुमार के दिशानिर्देश में तैयार की गई थी। डॉ.

नीलज कुमार ने बताया कि फसल अवशेष जलाने से न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है बल्कि भूमि की उर्वरक क्षमता भी कम होती है। योजना कृषि अवशेष औद्योगिकी जैसे खाद्य बनाना, मशरूम जैसी खेती, कार्डबोर्ड बनाना और विजली उत्पादन के लिए भर्म्योवरण करना इस समस्या को हल करने में आशिक रूप से प्रभावी है।

हाइड्रोपोनिक तकनीक में रसायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है जिसका मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। तरल उर्वरक प्रयोग करने से इस दुष्प्रभाव से बचने के साथ-साथ रसायनिक उर्वरकों के खर्च को भी कम किया जा सकता है। इस तरल उर्वरक का उपयोग हाइड्रोपोनिक तकनीक द्वारा प्रयोग किया जाना चाहिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
१११२, २०२२।	२२-११-२२	५	२-५

तरल उर्वरक में बदले जाएंगे फसल अवशेष

हकूमि को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग से मिला 30 लाख रुपये का प्रोजेक्ट

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग पंचकूला की ओर से तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायी परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस परियोजना के तहत फसल अवशेष, व्यायोगैस सलरी, ट्रॉटेड सींकेरेज बाटर व शीरा को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वीआर काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित



कुलपति प्रो. वीआर काम्बोज के साथ अधिकारी। • विज्ञापि

परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी, जहां व्यायोगैस सलरी, सींकेरेज पानी और शीरा जैसे औद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोबियल अपशिष्टन और किण्वन तकनीकों को उपयोग करके तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ हाइड्रोपोनिक खेती की औसत उपज को बढ़ाने में भी सहायक होगा।

इसके अतिरिक्त इस परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर रसायनिक उर्वरकों से जुड़े जोखिमों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रसायनिक उर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी। यह परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डा. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डा. लोलावती एवं हार्टिकल्चर के सहायक प्रोफेसर डा. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान में प्रयोग किया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नैनै अ१२२	२२-११-२२	२	३-५

फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज वाटर से तरल उर्वरक तैयार करेगा एचएयू

उर्वरक को हाइड्रोपोनिक खेती में किया जा सकता प्रयोग, 30 लाख का प्रोजेक्ट मिला

मास्कर न्यूज़ | हिसार



फसल अवशेष प्रबंधन की दिशा में एचएयू को एक और बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई है। फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज वाटर से एचएयू तरल उर्वरक तैयार करेगा। जिसे हाइड्रोपोनिक खेती में किसान इस्तेमाल कर सकेंगे। जिससे खेती की औसत उपज भी बढ़ सकेगी। इस दिशा में एचएयू के वैज्ञानिकों ने प्रयास शुरू कर दिया है।

इसके लिए एचएयू को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंक्तकूला द्वारा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औप्रौद्योगिक अवशेष से तरल उर्वरक का विकास है। इस परियोजना के

तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज वाटर व शैशा को मिलाकर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा। वीरी प्रो. बी.आर. कम्बोज ने प्रातिरक्षित मछकोबायोलॉजी विभाग को किसानों के लाभ के लिए उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान परियोजना परिवर्त होने पर बधाई दी।

यह परियोजना मछकोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. लीला वती एवं हार्टिकल्चर के सहायक प्रोफेसर डॉ. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम रम्मा और मैत्रिक विज्ञान एवं मानविकी कारेनेज के अधिकारी डॉ. नीरज कुमार के द्वारा निर्देश में तैयार की गई थी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभ्युक्ताला	२३-११-२२	२	५-४

खेतीबाड़ी

एचएयू को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग हरियाणा से मिला 30 लाख का प्रोजेक्ट, कुलपति प्रो. कांबोज बोले-

फसल अवरोधों को तरल उर्वरक में बदलने पर होगा कार्य

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग पंचकूला की ओर से तीन सल्ल की अधिकृति के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायी परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी, जहां बायोगैस सलारी, सीधेरेज पानी और शीरा जैसे औद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोवियल अपथटन और



माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. लीलावती, सहायक प्रोफेसर डॉ. अरविंद मलिक को सम्मानित करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज।

हिपवन तकनीकों को उपयोग करके तरल बायोगैस सलारी, ट्रीटेड सीधेरेज बॉटर व शीरा उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा।

परियोजना के तहत फसल अवशेष, जिसका हाइड्रोपोलिनिक खंडों में इस्तेमाल किया

जाएगा। परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर रासायनिक उर्वरकों से जुड़े जोखिमों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रसायनिक उर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी।

परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. लीला वती एवं हार्टिकल्चर के सहायक प्रोफेसर डॉ. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. नीरज कुमार के दिशा निर्देश में तैयार की गई थी।

डॉ. नीरज कुमार ने बताया कि फसल अवशेष जलाने से न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है बल्कि भूमि की उर्वरक क्षमता भी कम होती है। तरल उर्वरक प्रयोग करने से इस दुष्प्रभाव से बचने के साथ-साथ रसायनिक उर्वरकों के खर्च को भी कम किया जा सकता।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब खबरें	२२-११-२२	५	१-३



कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज के साथ अधिकारीगण।

एच.ए.यू. ने फसल अवशेषों को तरल ऊर्वरक में बदलने पर होगा कार्य : प्रो. काम्बोज

हिसार, 21 नवम्बर (ब्लू): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकूला द्वारा 3 साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल ऊर्वरक का विकास है। इस परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज बॉटर व शीरा को मिला कर तरल ऊर्वरक बनाया जाएगा, जिसका इंडस्ट्रीयल खेती में इस्तमाल किया जाएगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज ने प्रगतिशील

माइक्रोबायोलॉजी विभाग को किसानों के लाभ के लिए उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान परियोजना परित होने पर बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी, जहां बायोगैस सलरी, सीवरेज यानी और शीरा जैसे औद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोबियल अपशिष्ट और किण्वन तकनीकों को उपयोग करके तरल ऊर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल ऊर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ

इंडस्ट्रीयल खेती की औसत उपज को बढ़ाने में भी सहायक होगा। इसके अतिरिक्त इस परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर ग्रासायनिक ऊर्वरकों से जुड़े जोखियों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रसायनिक ऊर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी।

यह परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा साहवान, विभागाध्यक्ष डॉ. लीला बती एवं हार्टिकल्चर के सहायक प्रोफेसर डॉ. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार के द्वारा निर्देश में तैयार की गई थी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीट सभाचार	२२-११-२२	४	३-६

एचएयू में फसल अवशेषों को तरल उर्वरक में बदलने पर होगा कार्य : प्रो. बी.आर. काम्बोज हृकृति को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, हरियाणा से मिला 30 लाख का प्रोजेक्ट

हिसार, 21 नवंबर (विरेंद्र थर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकुला द्वारा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज वॉटर व शीरा को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने प्रगतिशील माइक्रोबायोलॉजी विभाग को किसानों के लाभ के लिए उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान परियोजना पारित होने पर बधाइ देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ अधिकारीगण।

वैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए को बढ़ाने में भी सहायक होगा। इसके निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित अतिरिक्त इस परियोजना से मानव परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी, जहाँ बायोगैस सलरी, सीधेज पानी और शीरा जैसे औद्योगिक कचरे के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रसायनिक उर्वरकों की कुल लागत में भी कमी अप्पी। यह परियोजना उपयोग करके तरल उर्वरक का उपयोग करके तरल उर्वरक का प्रोफेसर, डॉ. सीपा सांगवान, से उपन्य तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ हार्टिकल्चर के सहायक प्रो. डॉ. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान की समस्या को हल करने के लिए हाइड्रोपोनिक खेती की औसत उपज

निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. नीरज कुमार के दिशानिर्देश में तैयार की गई थी। डॉ. नीरज कुमार ने बताया कि फसल अवशेष जलाने से न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है बल्कि भूमि की उर्वरक समस्ता भी कम होती है। मौजूदा कृषि अवशेष आधारित प्रौद्योगिकियां जैसे खाद बनाना, मशक्कुम की खेती, कार्बोर्बे बनाना और बिजली उत्पादन के लिए भर्तीकरण करना इस समस्या को हल करने में आशिक रूप से प्रभावी है। हाइड्रोपोनिक तकनीक में रसायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है जिसका मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। तरल उर्वरक प्रयोग करने से इस दुष्प्रभाव से बचने के साथ-साथ रसायनिक उर्वरकों के खर्च की भी कम किया जा सकेगा। इस तरल उर्वरक का उपयोग हाइड्रोपोनिक तकनीक द्वारा पर्यावरण संरक्षण के उपादन में प्रयोग किया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
१५ अक्टूबर २०२२	२२-११-२२	२	३

रंगोली और प्रश्नोत्तरी में स्टूडेंट्स ने की बढ़- चढ़कर भागीदारी

सिटी रिपोर्टर • विश्व मत्स्य दिवस पर एचएयू के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय में प्रश्नोत्तरी, रंगोली प्रतियोगिता और अन्य कार्यक्रम किया गया, जिसमें छात्रों के अलावा वैज्ञानिकों ने भागीदारी की। एचएयू के मत्स्य विज्ञान कॉलेज के ढीन डॉ. नीरज ने बताया कि विवि के बीसी प्रोफेसर बीमार काम्बोज के दिशा निर्देश पर किसानों की आमदनी बढ़ाने एवं खेती के विविधिकरण के तहत मत्स्य विज्ञान कॉलेज के वैज्ञानिक विभिन्न क्षेत्रों में शोध के लिए जुटे हुए हैं। प्रो. बलदेव राज ने कहा कि यदि तकनीकी कौशल से खारे पानी की भूमि पर सफेद झींगा पालन किया जाए तो यह किसानों एवं युवाओं के लिए बहुत अच्छी अवधि का साधन हो सकता है। प्रतियोगिताओं में विजेताओं को सम्मानित किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
समस्त हरियाणा

दिनांक
21.11.22

पृष्ठ संख्या

कॉलम

एचएयू में फसल अवशेषों को तरल उर्वरक में बदलने पर होगा कार्य : प्रो. बी.आर. काम्बोज

समाचार हरियाणा न्यूज़

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, वैचकुला हाथ तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायी परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपारिषद से तरल उर्वरक का विकास है। इस परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोर्गेम सलाई, ट्रीटेड सीलरेज बटिर व भीरा को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा। विवरक हाईट्रोफीनिक खेती में इसीमाल किया जाएगा। विश्वविद्यालय के कूलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने प्राक्तिकाल माइक्रोबायोलॉजी विभाग को विज्ञानों के साथ कृषि अवशेषों को उपयोग करके तरल उर्वरक को बनाने के लिए उच्च शुल्कता वाले अनुसंधान परियोजना परिवर्त होने पर ध्यान देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष कलाने की समस्या को हल करने के लिए पर्यावरण को साथ पहुंचाने के साथ-साथ



वैकलिक प्रबंधन करने के लिए नियंत्रण प्रयोगस्वरूप है। हाईट्रोफीनिक खेती की ओर तरल उर्वरक को बढ़ाने में हल करने में आर्थिक रूप से अधिकारी है।

हाईट्रोफीनिक खेती की ओर तरल उर्वरक को बढ़ाने में आर्थिक रूप से अधिकारी है। हाईट्रोफीनिक लकड़ीक में रसायनिक उर्वरकों का से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर रासायनिक प्रभाव किया जाता है विषयक गहन रसायन पर उर्वरकों से जुड़े जीवितमान के साथ-साथ कृषि विभाग द्वारा भाव पढ़ा जाता है। तरल उर्वरक प्रयोग करने से इस के कारण में रसायनिक उर्वरकों की कूल लागत में भी तुष्टियापूर्ण से बचने के साथ-साथ रसायनिक उर्वरकों के कमी आएंगी। यह परियोजना माइक्रोबायोलॉजी के रूच बढ़ाने की कमी का उपयोग हाईट्रोफीनिक लकड़ीक द्वारा विभागाध्यक्ष डॉ. लोला चती एवं हार्डिकल्यूर के प्रयोग के उपयोग के उपरान्त में प्रयोग किया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाप्ति पत्र का नाम
टैन में संवरा

दिनांक
22.11.22

पृष्ठ संख्या

कॉलम

हकूमित ने फसल अवशेषों को तरल उर्वरक ने बदलने पर होगा कार्य : कुलपति

● हकूमित को विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, हरियाणा से मिला 30 लाख का प्रोजेक्ट

संबोधन न्यूज़/सुरेंद्र सोढ़ी

हिसार, 21 नवंबर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकूला द्वारा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीबरेज बॉटर व शीरा को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वीआर काम्पोज के साथ अधिकारीगण।



कुलपति प्रो. वीआर काम्पोज के साथ अधिकारीगण।

पारित होने पर बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी, जहां बायोगैस सलरी, सीबरेज पानी और शीरा जैसे औद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोबियल अपघटन और किण्वन तकनीकों को उपयोग करके तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस

परियोजना से उत्पन्न तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ हाइड्रोपोनिक खेती की औसत उपज को बढ़ाने में भी सहायक होगा। इसके अतिरिक्त इस परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर रासायनिक उर्वरकों से जुड़े जोखिमों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रसायनिक उर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी। यह परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा

संगवान, विभागाध्यक्ष डा. सीला बती एवं हार्टिंकल्चर के सहायक प्रोफेसर डा. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिकारी डा. नीरज कुमार के दिशानिर्देश में तैयार की गई थी।

डा. नीरज कुमार ने बताया कि फसल अवशेष जलाने से न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है बल्कि भूमि की उर्वरक क्षमता भी कम होती है। मौजूदा कृषि अवशेष आधारित प्रौद्योगिकियाँ जैसे खाद बनाना, मशरूम की खेती, कार्डबोर्ड बनाना और बिजली उत्पादन के लिए भर्मीकरण करना इस समस्या को हल करने में जांशिक रूप से प्रभावी है। इस तरल उर्वरक का उत्पादन हाइड्रोपोनिक तकनीक द्वारा पत्तेदार सब्जियों के उत्पादन में प्रयोग किया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैलो दिसाई	22.11.22	-----	-----

एचएयू में फसल अवशेषों को तरल उर्वरक में बदलने पर होगा कार्यः प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकुला द्वारा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है।

परियोजना का विषय जलवायु

परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज बॉटर व शीरा को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने परियोजना को किसानों के लाभ के लिए उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान के लिए उत्पादन करके तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ हाइड्रोपोनिक खेती को औसत उपज को बढ़ाने में भी सहायता होगा। इसके अतिरिक्त इस परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर रासायनिक उर्वरकों से जुड़े जोखिमों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रसायनिक उर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी।

परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस होने पर बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन करने

के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी, जहां बायोगैस सलरी, सीवरेज पानी और शीरा जैसे औद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोबियल अपशिष्ट और किण्वन तकनीकों को उपयोग करके तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ हाइड्रोपोनिक खेती को औसत उपज को बढ़ाने में भी सहायता होगा। इसके अतिरिक्त इस परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर रासायनिक उर्वरकों से जुड़े जोखिमों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रसायनिक उर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी।

यह परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायत क्रोफेसर, डॉ. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. लीला चत्ती एवं हार्टिकल्चर के सहायक प्रोफेसर डॉ. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार के दिशानिर्देश में तैयार की गई थी। डॉ. नीरज कुमार ने बताया कि फसल अवशेष जलाने से न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है बल्कि भूमि की उर्वरक क्षमता भी कम होती है। मौजूदा कृषि अवशेष आधारित प्रौद्योगिकियां जैसे खाद बनाना, मशरूम की खेती, काढ़बोई बनाना और बिजली उत्पादन के लिए भस्मीकरण



परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस

होने पर बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन करने



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उन्नाज समाज	22.11.22	----	----

एचएयू में फसल अवशेषों को तरल उर्वरक में बदलने पर होगा कार्यः प्रो. बी.आर. काम्बोज



हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकुला द्वारा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटेड सीवरेज वॉटर व शीरा को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने प्रगतिशील माइक्रोबायोलॉजी विभाग को किसानों के लाभ के लिए उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान परियोजना पारित होने पर बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी, जहां बायोगैस सलरी, सीवेज पानी और शीरा जैसे औद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोबियल अपघटन और किणवन तकनीकों को उपयोग करके तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ हाइड्रोपोनिक खेती की औसत उपज को बढ़ाने में भी सहायक होगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
रिपोर्ट पत्र	21.11.22	-----	-----

हकूमि को हरियाणा सरकार से मिला 30 लाख का प्रोजेक्ट

सिटी पत्त्व न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंजाबकूला द्वारा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायी परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण का कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अवशिष्ट से तरल उत्कर्ष का विकास है।

कुलपति प्रो. डॉ. अरुण काम्होज ने कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल



करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन कामे के लिए निरंतर प्रयासात्मक है।

प्रश्न करते हैं, जहाँ कृषि अवशेषों को माइक्रोविल अस्थटन और किण्वन तकनीकों को उपयोग करके

तरल उत्कर्ष का उत्थान किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल उत्कर्ष पर्यावरण को साध

पूर्णाने के साथ-साथ हाइड्रोगेनिक खनी की भौमिक उपज को बढ़ाने में भी सहायक होगा।

यह परियोजना माइक्रोविलों और विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. सीता वर्मा एवं हाईटेकल्चर के सहायक प्रोफेसर डॉ. अश्विंद मलिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम सार्मा और मीलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. नीरज कुमार के दिशानिर्देश में तैयार की गई थी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	23.11.2022	--	--

एचएयू में फसल अवशेषों को तरल उर्वरक में बदलने पर होगा कार्यः प्रो. काम्बोज



**नभ छोर न्यूज ॥ 21 नवंबर
हिसार।** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को फसल अवशेष प्रबंधन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पंचकूला द्वासा तीन साल की अवधि के लिए 30 लाख की अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई है। परियोजना का विषय जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए कृषि औद्योगिक अपशिष्ट से तरल उर्वरक का विकास है। इस परियोजना के तहत फसल अवशेष, बायोगैस सलरी, ट्रीटीड सीवेरेज वॉटर व शीरा को मिला कर तरल उर्वरक बनाया जाएगा जिसका हाइड्रोपोनिक खेती में इस्तेमाल किया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय फसल अवशेष जलाने की समस्या को हल करने के लिए वैकल्पिक प्रबंधन करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। प्रस्तावित परियोजना एक विकल्प प्रदान करेगी,

जहां बायोगैस सलरी, सीवेरेज पानी और शीरा जैसे औद्योगिक कचरे के साथ कृषि अवशेषों को माइक्रोबियल अपघटन और किण्वन तकनीकों को उपयोग करके तरल उर्वरक का उत्पादन किया जाएगा। इस परियोजना से उत्पन्न तरल उर्वरक पर्यावरण को लाभ पहुंचाने के साथ-साथ हाइड्रोपोनिक खेती की औसत उपज को बढ़ाने में भी सहायक होगा। इसके अतिरिक्त इस परियोजना से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर रासायनिक उर्वरकों से जुड़े जोखिमों के साथ-साथ कृषि निवेश के रूप में रसायनिक उर्वरकों की कुल लागत में भी कमी आएगी। यह परियोजना माइक्रोबायोलॉजी विभाग की सहायक प्रोफेसर, डॉ. सीमा सांगवान, विभागाध्यक्ष डॉ. लीलावती एवं हॉटिकल्चर के सहायक प्रोफेसर डॉ. अरविंद मलिक द्वारा अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा और मौलिक विज्ञान एवं

मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार के दिशानिर्देश में तैयार की गई थी। डॉ. नीरज कुमार ने बताया कि फसल अवशेष जलाने से न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है बल्कि भूमि की उर्वरक क्षमता भी कम होती है। मौजूदा कृषि अवशेष आधारित प्रौद्योगिकियाँ जैसे खाद बनाना, मशरूम की खेती, कार्डबोर्ड बनाना और बिजली उत्पादन के लिए भस्मीकरण करना इस समस्या को हल करने में आंशिक रूप से प्रभावी है। हाइड्रोपोनिक तकनीक में रसायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है जिसका मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। तरल उर्वरक प्रयोग करने से इस दुष्प्रभाव से बचने के साथ-साथ रसायनिक उर्वरकों के खर्च को भी कम किया जा सकेगा। इस तरल उर्वरक का उपयोग हाइड्रोपोनिक तकनीक द्वारा पतेदार सब्जियों के उत्पादन में प्रयोग किया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एनडीएमसी	23.11.22	2	3-4

एचएयू में प्रश्नोत्तरी, रंगोली प्रतियोगिता आयोजित



हिसार| एचएयू में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मौजूद स्टूडेंट्स व अन्य। विश्व मत्स्य दिवस पर एचएयू के मत्स्य विज्ञान कालेज में प्रश्नोत्तरी, रंगोली प्रतियोगिता और अन्य कार्यक्रम किए गए। जिसमें छात्रों के अलावा वैज्ञानिकों ने भी भागीदारी की। एचएयू के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय के डीन डॉ. नीरज ने बताया कि विवि के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज के दिशा निर्देश पर किसानों की आमदनी बढ़ाने एवं खेती के विविधीकरण के तहत मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय के वैज्ञानिक विभिन्न क्षेत्रों में शोध के लिए जुटे हुए हैं।